ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 147 हिन्दी मासिक पत्रिका अगस्त 2020 30/-प्रति

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर मुख्यालय में प्रातःकालीन वेला में विराजमान समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग (15 जनवरी 2009)

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 13 अंक: 147 | हिन्दी मासिक पत्रिका | अगस्त 2020

वार्षिक: 300/- | द्विवार्षिक: 600/- | मूल्य 30/-

❖ संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

❖ सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:

स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office

Spiritual Science Magazine:

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सच्चा गुरु....4
विशुद्ध प्रेम (सम्पादकीय)....5-7
दिव्य ज्ञान का दान....8
जीवन के यथार्थ का रहस्य भीतर से ही समझ में आएगा....9
साधना विषयक बातें....10-11
विज्ञान एवं अध्यात्म....12
आओ उस ज्योति में पहुँचे जो स्वर लोक की है....13
नाम खुमारी एक सच्चाई है....14-15
'परिवर्तन' प्रकृति का अटल सिद्धान्त है।....16
हीरे का मूल्य....17
मातृ शक्ति....18
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....19-20
'Yug Parivartan'....21-22
सत्संग का प्रभाव....23-24
जाति परिवर्तन संभव....25
योग के आधार....26
सनातन धर्म का उत्थान....27
वर्तमान भारत....28
सनातन धर्म....29
ईश्वर की प्राप्ति का पथ शरीर के भीतर ही है....30
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण....31
सद्गुरुदेव का आगमन....32
आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान का जनक है....33
परमसत्ता से सर्वाधिक दूरी का कारण....34
संजीवनी मंत्र....35
यादों के पल....36-38
ध्यान की विधि....39

सच्चा गुरु

''इस प्रकार शांत, स्थिर और निर्भय, वह प्राणी अपना ही नहीं, संसार के अनेक जीवों का कल्याण करता हुआ, अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। यह होता है आध्यात्मिक संत सद्गुरुदेव की कृपा का प्रभाव। ऐसा संत पुरुष जो मनुष्यों को द्विज बनाने की स्थिति में पहुँच जाता है, गुरु कहलाने का अधिकारी होता है। 'गुरु पद' कोई खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है। यह पद न किसी जाति विशेष में जन्म लेने से प्राप्त होता है, न कपड़े रंग कर स्वांग रचने से, न किसी शास्त्र के अध्ययन से।

यह तो मन रंगने की बात है। ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी अधिक ऊर्जा का पुँज है, ऐसी परमसत्ता से जुड़ने के कारण, गुरु पारस बन जाता है। अतः जो मनुष्य इस पारस के संपर्क में आता है, सोना बन जाता है। ऐसे गुण धर्म के बिना जितने भी गुरु संसार में विचरण कर रहे हैं, सभी ने अपने पेट के लिए विभिन्न स्वांग रच रखे हैं।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

विशुद्ध प्रेम

जब मैं था तब हरि नाहि, अब हरि है मैं नाहि।
प्रेम गली अति सांकरि, ता में दो न समाय।। –कबीरदास जी

भक्तिकाल में संत कबीर ने प्रेम को परिभाषित करते हुए कहा है कि विशुद्ध प्रेम केवल ईश्वर से ही किया जा सकता है जो स्थायी और अटूट होता है, बाकी सारे प्रेम मनुष्यों की माँगों के आदान-प्रदान पर टिके होते हैं। असली प्रेम तो परमात्मा के मिलन से ही होता है और यह प्रेम ज्ञान से प्रकट होता है। और ज्ञान का उदय योग से ही संभव है और योग समर्थ सद्गुरु की करुण कृपा के बिना सिद्ध नहीं होता।

महर्षि श्री अरविन्द और श्रीमां ने प्रेम क्या है, इसको अपने शब्दों में भलीभांति समझाया है–

मानव प्रेम का भागवत प्रेम के साथ क्या संबंध है? क्या मानव प्रेम भागवत प्रेम में बाधक है? क्या यह ठीक नहीं है कि मानव प्रेम को धारण करने की योग्यता भागवत प्रेम को धारण करने के सामर्थ्य का सूचक है? क्या ईसामसीह, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद जैसे महान् आध्यात्मिक व्यक्ति स्वभावतः अत्यंत प्रेमी और स्नेही नहीं थे?

प्रेम विश्वव्यापी महान् शक्तियों में से एक है। यह अपने-आप में स्थित है और जिन पदार्थों में यह प्रकट होता है अथवा जिनके द्वारा अपने-आपको प्रकट करता है, उनसे पूरी तरह स्वतंत्र रहता है। इसे जहाँ अभिव्यक्त होने की संभावना दिखती है, जहाँ कहीं ग्रहणशीलता होती है, जहाँ कहीं द्वार खुला होता है, वहीं यह अभिव्यक्त हो जाता है। तुम जिसे प्रेम कहते हो, जिसे तुम निजि या व्यक्तिगत वस्तु समझते हो वह इस विश्वव्यापी शक्ति को ग्रहण करने और अभिव्यक्त करने की तुम्हारी क्षमता मात्र है। परंतु विश्वव्यापी होने के नाते यह कोई अचेतन शक्ति नहीं है, यह एक परम सचेतन दिव्य शक्ति है। यह सचेतन रूप में धरती पर अपनी अभिव्यक्ति और सिद्धि के लिये प्रयत्न करती है, सचेतन होकर

अपने उपकरण चुनती है, जो लोग इसके आह्वान का उत्तर दे सकते हैं उन्हें यह अपनी तरंगों के प्रति जाग्रत् करती है और अपने शाश्वत लक्ष्य को उनके अंदर सिद्ध करने का प्रयास करती है, और जब कोई उपकरण अनुपयुक्त होता है तो उसे छोड़कर दूसरों को ढूँढ़ती है। मनुष्य सोचते हैं कि वे एकाएक प्रेम-पाश में बँध गये हैं, वे अपने प्रेम को उत्पन्न होते, बढ़ते और फिर मुरझाते देखते हैं - अथवा, हो सकता है कि कुछ लोगों में, जो उसकी अधिक स्थायी क्रिया के लिये विशेष रूप से उपयुक्त हैं, यह कुछ अधिक टिके। परंतु यह समझना भ्रम है कि यह उनका अपना व्यक्तिगत अनुभव था। वह तो विश्वव्यापी प्रेम के सनातन समुद्र की एक लहर मात्र थी।

प्रेम विश्वव्यापी और सनातन है, अपने-आपको सदा अभिव्यक्त करता रहता है। इसकी बाह्य क्रियाओं में जो विकार दिखायी देते हैं, वे इसके उपकरणों के होते हैं। प्रेम केवल मानव प्राणियों में ही अभिव्यक्त नहीं होता, यह सर्वत्र है। इसकी गति वनस्पतियों में भी है, शायद पत्थरों तक में भी है। पशु-पक्षियों में इसकी उपस्थिति का पता लगाना सरल है।

इस महान् और दिव्य शक्ति के विकार, इसके परिमित उपकरण की मलिनता, अज्ञान और स्वार्थ से आते हैं। प्रेम में, इस शाश्वत शक्ति में कोई चिपटने की वृत्ति नहीं होती, न कोई इच्छा, न स्वत्व की भूख और न स्वार्थभरी आसक्ति होती है।

"प्रेम अपनी विशुद्ध गति में उस परमात्मा के साथ एक होने के लिये आत्मा की खोज है, यह एक ऐसी खोज है जो अन्य समस्त वस्तुओं से निरपेक्ष और निर्लिप्त रहती है।"

भागवत प्रेम अपने-आपको देता है, कोई माँग नहीं करता। मनुष्यों ने इसको क्या बना डाला है, यह कहने की

आवश्यकता नहीं। उन्होंने इसे एक भद्दी और वीभत्स वस्तु बना दिया है। फिर भी, मनुष्यों में प्रेम का प्रथम संस्पर्श अपने पवित्रतर सार का कुछ अंश ले आता है। क्षणभर के लिये वे अपने-आपको भुला देने में समर्थ हो जाते हैं, क्षण-भर के लिये इसका दिव्य स्पर्श, सभी सुंदर और मनोहर चीजों को जगाता है और बढ़ाता है परंतु बाद में अपनी अपवित्र माँगों से भरी, बदले में किसी चीज की याचना करती, जो कुछ देती है उसके बदले में कुछ चाहती, अपनी निकृष्ट तृप्तियों के लिये शोर मचाती और जो दिव्य था उसे विकृत और कलुषित करती हुई मानव प्रकृति ऊपरी तल पर उठ आती है।

भागवत प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिये तुम्हें उसे ग्रहण करने योग्य होना चाहिये। क्योंकि, उसे वे ही अभिव्यक्त कर सकते हैं जो इसकी नैसर्गिक प्रवृत्ति के लिये स्वभावतः खुले होते हैं। उनमें यह उद्घाटन जितना विशाल और अबाध होगा उतना ही वे दिव्य प्रेम को उसकी मौलिक पवित्रता के साथ अभिव्यक्त कर सकेंगे और जितना ही यह निम्नतर मानव भावों से मिश्रित होता है, उतना ही अधिक विकार इसकी अभिव्यक्ति में आ जाता है।

जो प्रेम को उसके असली और सत्य रूप में ग्रहण करने के लिये खुला हुआ नहीं है, वह भगवान् के सपीप नहीं पहुँच सकता। ज्ञान-मार्ग के अनुयायी भी एक समय ऐसे स्थल पर जा पहुँचते हैं, जहाँ से यदि वे आगे बढ़ना चाहें तो वे अपने-आपको ज्ञान के साथ प्रेम में प्रवेश करते हुए पाते हैं और अनुभव करते हैं कि दोनों एक ही हैं। ''ज्ञान भागवत मिलन की ज्योति है और प्रेम; ज्ञान का हृदय।'' आत्मा की प्रगति में एक ऐसा स्थान आता है जहाँ ये दोनों मिल जाते हैं और तुम एक को दूसरे से अलग नहीं कर सकते। आरंभ में इन दोनों के बीच तुम जो विभाजन करते हो, वह मन की रचना है : उच्चतर भूमिका पर उठते ही ये भेद गायब हो जाते हैं।

जो लोग इस जगत् में भगवान् को प्रकट करने और पार्थिव जीवन को रूपांतरित करने के लिये आये हैं उनमें से कुछ ने ''दिव्य प्रेम''को अधिक पूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया है। कुछ में इस अभिव्यक्ति की पवित्रता इतनी अधिक

www.the-comforter.org

थी कि समस्त मानवजाति ने उन्हें गलत समझा। यहाँ तक कि उन पर कठोर और प्रेमशून्य होने का दोष लगाया गया है, यद्यपि उनमें दिव्य प्रेम विद्यमान है परंतु उनमे इसका रूप भी इसके तत्त्व की तरह मानव नहीं, दिव्य होता हैं। मनुष्य जब प्रेम की बात करता है तो वह इसे भावावेश और भावुकतापूर्ण दुर्बलता के साथ जोड़ देता है। परंतु मनुष्य आत्मविस्मृति की दिव्य प्रगाढ़ता से, बिना संकोच अपने लिये कुछ भी बचाकर रखे बिना, बदले में कुछ भी माँगे बिना, भेंट के तौर पर अपने-आपको पूर्ण रूप से न्यौछावर कर देने की शक्ति से अपरिचित-सा है। और जब यह भागवत प्रेम दुर्बल भावुकता-भरे भावावेशों के बिना, अपने सत्य स्वरूप में आता है तो लोग इसे निष्ठुर और नीरस पाते हैं, वे इसमें प्रेम की उच्चतम और तीव्रतम शक्ति को नहीं पहचान पाते हैं।

निचली श्रेणियों में प्रेम, मेरा ख्याल है कि ''प्रेम'' किसी ऐसी चीज को अभिव्यक्त करता है जो ऐसा सामान्य सद्भावना से अधिक तीव्र होती है, जिसमें केवल चाह या स्नेह का ही समावेश होता है लेकिन प्रेम हो या सद्भावना, मानव भावना सदा या तो अहंकार पर आधारित होती है या उससे प्रबल रूप में मिश्रित होती और इस कारण वह शुद्ध नहीं हो सकती।

उपनिषद् में कहा गया है, मनुष्य पत्नी से पत्नी के लिये प्रेम नहीं करता, बालक या मित्र से उसके लिये प्रेम नहीं करता बल्कि ''आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति'', प्रायः बदले की, लाभ या किसी तरह के फायदे की आशा रहती है या अमुक सुख या संतोष की, चाहे वह मानसिक, प्राणिक या भौतिक कोई-सा क्यों न हो जो प्रेम-पात्र से मिल सकता है, इन चीजों को अलग कर दो तो शीघ्र ही प्रेम डूब जाता, कम हो जाता, गायब हो जाता या क्रोध, लांछन, उदासीनता या घृणा तक में बदल जाता है। लेकिन आदत का तत्त्व भी होता है। कोई ऐसी चीज होती है जो प्रेम पात्र की उपस्थिति को अपरिहार्य-सा बना देती है क्योंकि वह हमेशा से रहती आयी है-और कभी-कभी यह इतनी मजबूत होती है कि स्वभाव के एकदम असंगत होने, भयानक विरोध, घृणा का सा भाव होने के बावजूद वह बनी रहती है और असंगतियों की ये खाइयाँ भी व्यक्तियों को अलग करने में असमर्थ होती हैं, अन्य लोगों में यह भाव ज्यादा ठंडा पड़ जाता है और कुछ समय के बाद व्यक्ति अलगाव के लिये अभ्यस्त हो जाता है या स्थानापन्न

को स्वीकार कर लेता है। और फिर बहुधा एक तरह का सहज आकर्षण या मानसिक, प्राणिक या भौतिक घनिष्ठता होती है जो प्रेम को अधिक प्रबल संशक्ति देती है और अंत में उच्चतम या गंभीरतम प्रकार का चैत्य तत्त्ववाला प्रेम होता है जो अंतर्तम हृदय और अंतरात्मा से आता है - एक तरह का आंतरिक ऐक्य या आत्मदान या कम-से-कम उसके लिये चाह, एक ऐसा बंधन या ऐसी ललक जो अन्य परिस्थितियों या तत्त्वों से स्वतंत्र हो, जो किसी मानसिक, प्राणिक या भौतिक सुख, संतोष, रस या अभ्यास के लिये नहीं, अपने ही लिये अस्तित्व धारण करती हो।

परंतु सामान्यतः मानव प्रेम में जहाँ चैत्य तत्त्व होता भी है वह भी अन्यों के साथ इतना अधिक मिश्रित, उनके भार से दबा और छिपा होता है कि उसे अपने-आपको कार्यान्वित करने या अपनी स्वाभाविक शुद्धि और पूर्णता प्राप्त करने का अवसर नहीं के बराबर मिलता है।

अतः जिसे प्रेम कहा जाता है, वह कभी एक चीज होती है कभी दूसरी, प्रायः उसमें बहुत घालमेल होता है और तुम्हारे प्रश्नों का व्यापक उत्तर देना असंभव है कि इस या उस अवस्था में प्रेम का अर्थ क्या है। यह व्यक्तियों और परिस्थितियों पर निर्भर है।

जब प्रेम भगवान् की ओर जाता है तब भी उसमें यह मानव तत्त्व मिला रहता है। उसमें बदले के लिये पुकार होती है और बदला आता हुआ न दिखायी दे तो प्रेम नीचे खिसकने लगता है, उसमें स्वार्थ होता है। भगवान् उन सब चीजों के दाता होते हैं जिनकी मनुष्य माँग करता है और अगर माँगें पूरी न हो तो आदमी भगवान् से रूठ जाता है, श्रद्धा, उत्साह आदि का क्षय होता है। लेकिन मूलतः भगवान् के लिये सच्चा प्रेम इस तरह का नहीं होता बल्कि चैत्य और आध्यात्मिक होता है।

चैत्य तत्त्व अंतर्तम सत्ता के संपर्क की, विलय की, अपनी उच्चतम और समग्र आत्मा और सत्ता के मूल, चेतना और आनंद यानी भगवान् के साथ ऐक्य की आवश्यकता। ये दोनों एक ही चीज के दो पार्श्व हैं। मन, प्राण और शरीर इस प्रेम को सहारा देने वाले और पानेवाले तो हो

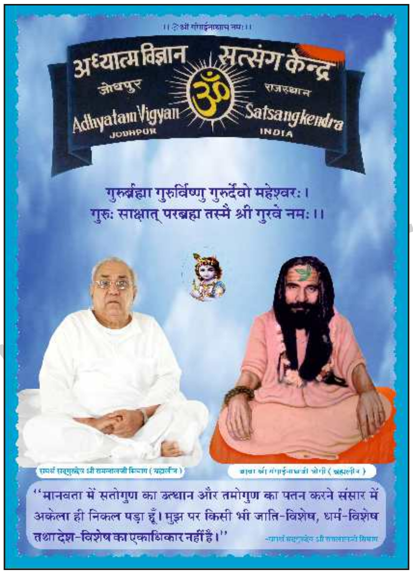

सकते हैं पर वे पूरी तरह से तभी होंगे जब उन्हें सत्ता के चैत्य और अध्यात्म तत्त्वों के साथ फिर से गढ़ा जाये और वे अहंकार के निम्नतर आग्रह तक को न ले आयें।

यह इस पर निर्भर है कि ''प्रेम'' से तुम्हारा क्या मतलब है? स्वभावतः भागवत प्रेम तो नहीं, परंतु प्राण में सब प्रकार के आवेग, आकर्षण कामनाएँ मौजूद रहती हैं। जड़ पदार्थ में दिव्य चेतना के अवरोहण और फैलाव की वजह से इन सब गतियों का गुण पूरी तरह बदल गया है। उसने सच्चे प्रेम की संभावना को जगा दिया है अन्यथा ये सब चीजें, जिन्हें प्रेम माना जाता है, सभी आवेग, आकर्षण और कामनाएँ - हड़प जाने की आवश्यकता-ये भली-भांति प्राण में मौजूद हैं। जड़ पदार्थ में प्रेम का पहला रूप है हड़पने की आवश्यक्ता-मनुष्य अधिकार जमाना, आत्मसात् करना चाहता है और इसे करने का सबसे अच्छा तरीका है निगल जाना और हजम कर लेना! यह कहा जा सकता है कि जब बिल्ली अपने बच्चों को खा जाती है तो वह उनके लिये प्रेम से भरी होती है और इसी तरह जब शेर मेमने को हड़पता है तो वह उसके लिये प्रेम से भरा होता है।

प्रेम केवल एक ही है, दिव्य प्रेम, शाश्वत वैश्व, सबके लिये, सभी चीजों के लिये समान। मनुष्य (मानव सत्ता) सब तरह के भावों, कामनाओं, सभी आकर्षणों सभी प्राणिक आदान-प्रदानों, सभी लैंगिक संबंधों, सभी आसक्तियों, सभी मित्रताओं और इनके अतिरिक्त और बहुत चीजों को प्रेम कहता है।

लेकिन यह सब प्रेम की छाया या प्रेम की विकृति तक नहीं है। ये मानसिक और प्राणिक क्रिया-कलाप, भावुकता या कामुकता भरी चीजें हैं, इसके सिवा कुछ नहीं। प्रेम सेक्स का आदान-प्रदान नहीं है। प्रेम प्राणिक आकर्षण और आदान-प्रदान नहीं है। प्रेम स्नेह के लिये हृदय की भूख भी नहीं है।

प्रेम सीधा एकमेव से आनेवाला प्रबल स्पंदन है और केवल बहुत शुद्ध और बहुत मजबूत लोग ही उसे ग्रहण और अभिव्यक्त कर सकते हैं। शुद्ध होने का अर्थ है केवल परम प्रभु के प्रभाव की ओर खुला होना, और किसी के लिए नहीं।

-संपादक

"दिव्य-ज्ञान" का दान

"मैं शैव हूँ। मेरे ब्रह्मलीन सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी के दिशा निर्देशों के अनुसार मैं इस "दिव्य-ज्ञान" का दान करने, संसार में निकला हूँ। इस दिव्य ज्ञान से साधक जीवन मुक्त हो जाता है। मेरे गुरुदेव शिव के अवतार थे। परन्तु ब्रह्मलीन होने के समय (31.12. 1983) तक, भविष्यवाणियों के अनुसार पृथ्वी पर उस **Divine Transformation** (दिव्य रूपांतरण) की स्थिति नहीं थी।"

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

जीवन के यथार्थ का रहस्य भीतर से ही समझ में आएगा

जीवन के अंत का कारण जर्जरता नहीं है; जीवन, मृत्यु की गोद में सो जाता है क्योंकि उसने स्वयं को पाया नहीं। सैकड़ों वर्ष पहले हमने आरोहण-यात्रा शुरू की थी और हमने बहुत से द्वीपों पर अधिकार भी किया, पर गुह्य रहस्य का अर्धांश ही हमारे हाथ लगा सो पुनः सब नष्ट हो गया। किन्तु संभवतः इसका कारण यह नहीं कि हमारी यह दौड़धूप व्यर्थ है, या हमारे 'पापों' का दंड हमें मिलता है, या हमें किसी असंभवप्राय महान् अपराध का प्रायश्चित करना है, बल्कि शायद इसका उद्देश्य है यहाँ, इसी लोक में, भौतिक तत्त्व के अंदर, उस गुह्य रहस्य के शेष अर्धभाग की खोज करना। मृत्यु और अचेतनता जबकि हमारा पीछा कर रही हैं, पीड़ा और बुराई हमें चैन नहीं लेने देतीं, इस दशा में हमारे लिए जो एकमात्र रास्ता रह जाता है वह यहाँ से भाग निकलना नहीं, बल्कि मृत्यु और अचेतनता की जड़ में, बुराई के मूल में दिव्य जीवन की कुँजी प्राप्त करना है। इस लोक की अंधनिशा का, अपनी बर्बरता का रूपांतर करना उपाय है, अपने द्वीप से इन्हें बाहर कर देना नहीं। चेतना के आरोहण के अनंतर होना चाहिए अवरोहण। ऊर्ध्व ज्ञान के प्रकाश के बाद आवश्यक है यहाँ का, इस निम्न लोक का आनंद, इस भौतिक तत्त्व का रूपांतर।

श्रीमाँ (श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी) का कथन है - हम कह सकते हैं कि ''सचमुच जब चक्र पूरा होकर, दोनों सिरे एक दूसरे को स्पर्श करेंगे, जब अत्यंत जड़ के अंदर उच्चतम की अभिव्यक्ति होगी और परात्पर सत्य, परमाणु के गर्भ से फूट निकलेगा, तभी वास्तव में अनुभूति अपनी सच्ची पराकाष्ठा पर पहुँचेगी, निर्णायक होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी देह में अनुभव किये बिना मनुष्य यथार्थतः कभी समझ ही नहीं पाता।''

लेखक-सत्प्रेम

'चेतना की अपूर्व यात्रा'

www.the-comforter.org

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने की पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सकें।

www.the-comforter.org

प्रश्नः- मां, जितना ही तुम्हारी शक्ति का शांत दवाब पड़ता है उतना ही, देखती हूँ, सिर में दर्द होता है।

उत्तरः- भौतिक मन खुल जाने पर उस तरह का सिरदर्द नहीं होगा।

प्रश्नः- मां, अंतर में जो सब सुन्दर अनुभूतियाँ होती हैं, उससे लगता है कि अब से, मैं इसी तरह के सुन्दर भाव में रहूँगी। किंतु बाहरी और चेतना में आते ही सब क्यों विलुप्त हो जाता है ? तुम्हें दुबारा याद करने से और दृष्टि अंतर की तरफ डालने से वे अनुभूतियाँ लौट आती हैं।

उत्तरः- ऐसा ही होता है। यदि याद करने पर सुन्दर अवस्था को दुबारा देख या अनुभव कर सकती हो तो यह उन्नति का लक्षण है। ऐसा लगता है कि बहिर्प्रकृति के विपरीत भाव का वेग कम होता जा रहा है।

प्रश्नः- कोई छोटी-छोटी बालिकाओं की तरह करुण मधुर स्वर में केवल तुम्हें बुला रही हैं, मां, हम तुम्हें चाहते हैं, हमें अपना बना लो। मैं उन्हें देख नहीं पा रही। इनमें कुछ सच्चाई है क्या ? ये कौन हैं ?

उत्तरः- हां, यह सच है। या तो ये बालिकाएँ नाना स्तरों पर तुम स्वयं हो या तुम्हारी चेतना की कुछ-एक शक्तियाँ (Energies)।

ज्ञान कई तरह का होता है-जैसी चेतना वैसा ही ज्ञान। ऊर्ध्व चेतना का ज्ञान सच्चा और परिष्कृत होता है-निम्न चेतना के ज्ञान में सत्य और मिथ्या मिले रहते हैं, अपरिष्कृत रहते हैं। बौद्धिक ज्ञान एक तरह का होता है, Supramental (अतिमानसिक) चेतना का ज्ञान और तरह का होता है, बुद्धि से परे। शांत ज्ञान है ऊर्ध्व चेतना का।

प्रश्नः- तुम्हें अपने अंदर अनुभव करने पर मानो, मैं अपने अस्तित्व को भूल जाती हूँ। मेरी चेतना, इच्छा, अनुभूति और सारी सत्ता मानो यंत्रवत् चलती है। कुछ समय बाद वह खो देती हूँ।

उत्तरः- ऐसी अनुभूतियाँ भी ऊर्ध्व चेतना की हैं। वह चेतना जब मन, प्राण और तन में उतरती है तब जाग्रतावस्था में ऐसा होता है।

('समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का ध्यान करने पर कई बार ऐसा महसूस हुआ। और बड़े ताज्जुब की बात तो यह कि कई बार मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरी जगह गुरुदेव ध्यान कर रहे हैं। मैं हूँ ही नहीं। सिर्फ गुरुदेव ही ध्यान कर रहे थे। कुछ समय बाद सामान्य स्थिति हुई तो वापस महसूस हुआ कि मैं बैठा ध्यान कर रहा हूँ। ध्यान की गइराई में ऐसी अनुभूति होती है।'- एक साधक का अनुभव)

प्रश्नः- मैंने एक छोटे-से सुन्दर पौधे को देखा। उसके पत्ते चांदनी जैसे धवल और उज्ज्वल थे। पौधा क्रमशः बड़ा और उज्ज्वल होता गया और अपने-आपको भगवान् की तरफ

खोलने लगा। और देखा कि एक शांत स्वच्छ समुद्र तुम्हारी ओर बह रहा है, मैं जो समर्पण करती हूँ, वह इस समुद्र के साथ एक हो जाता है।

उत्तरः- पौधा तुम्हारे भीतर आध्यात्मिकता की वृद्धि का प्रतीक है। समुद्र हुआ तुम्हारा Vital (प्राण)।

प्रश्नः- अतिमानस का प्रकाश (Supramental light) क्या नारंगी रंग का होता है?

उत्तरः- हाँ, आदि Supramental light (अतिमानसिक प्रकाश) ऐसा नहीं होता, पर जब वह प्रकाश physical (भौतिक स्तर) पर उतरता है, तब वह इसी रंग का हो जाता है।

यह बहुत अच्छा है। सत्य और मिथ्या का इस प्रकार अलग-अलग हो जाना Psychic (चैत्य पुरुष) के जाग्रत् भाव का लक्षण है। Psychic discrimination (चैत्य पुरुष के विवेक) द्वारा ऐसी छंटाई होती है।

साधक-साधिकाओं की बातों के बारे में बहुत सोचना नहीं-उससे मन सहज ही साधारण बाह्य चेतना में उलझ जाता है-यह सब शक्ति को समर्पण कर, शक्ति के ऊपर निर्भर रह भीतर निवास करना चाहिये।

(इस संबंध में पूज्य सद्गुरुदेव ने हमेशा अपने प्रवचनों में कहा कि "जो कुछ मिलेगा, आपके अंदर से मिलेगा।" इसलिए पूर्ण रूप से गुरुदेव के प्रति ही समर्पित होना, आराधना के सत्य पथ पर चलना है।)

प्रश्नः- मानो एक छोटी बालिका मेरे साथ-साथ घूम-फिर रही है। जब वह बाह्य सत्ता पर प्रभाव डालती है तो मानो बाह्य सत्ता का कोई भाग तुम्हें पाने को aspire (लालायित होता) करता है।

उत्तरः- लगता है वह बालिका तुम्हारा अपना Psychic Being (चैत्य पुरुष) है-शक्ति का अंश।

यह सब विलाप और आत्म-ग्लानि की बात लिखने से विशेष कुछ उपकार नहीं होगा। शांतभाव से शक्ति के ऊपर निर्भर रह चलना होता है। यदि बाधा आती है तो शांतभाव से साधना करते हुए, शक्ति को पुकारते हुए, गुरु की शक्ति द्वारा उसे अतिक्रम करना होता है।

यदि अपने अंदर प्रकृति की कोई त्रुटि या गलत पक्रिया देखो तब भी विचलित, चंचल और दुःखी होने से कोई लाभ नहीं-साधना आगे बढ़ने से यह सब दूर हो जाएगा, ऐसा शांत विश्वास रखकर अपने को ऊपर की ओर खोलना चाहिये। योगसिद्धि या रूपांतर एक दिन में या कुछ दिनों में साधित नहीं होता। धीर और शांत रह पथ पर बढ़ना होता है।

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव के बताए पथ पर चलना

"मैं आपको एक तरीका बताऊँगा। आपका अपने आप से परिचय कराऊँगा, दूँगा कुछ नहीं। किसी गुरु के पास देने-लेने की गुँजाईश नहीं है। मेरे शरीर में, आपके शरीर में कोई अंतर नहीं है भाई, मेरे पास कोई ऐसी एडीशनल (अतिरिक्त) चीज नहीं है जो आपके पास नहीं है और मैं दूँ। आप जन्म से ही पूर्ण हो, समझ नहीं पा रहे हो आप क्या हो? मेरे को तो आपको अपने आपसे इन्ट्रोडक्सन (परिचय) करवाना है, आप क्या हो? कुछ देना-लेना नहीं है।

आप जन्म से ही पूर्ण हो, नहीं समझ पा रहे हो आप क्या हो? गुरु केवल रास्ता बताता है, मंजिल तक पहुँचने के लिए तो शिष्य को ही चलना पड़ता है।

मैं आपको एक तरीका बताऊँगा, उस तरीके से आप आराधना करोगे तो ही आपको फल मिलेगा। जो आराधना बताऊँगा वह नहीं करोगे तो कुछ नहीं होगा।" -समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
22 मई 2003

विज्ञान एवं अध्यात्म

मनुष्य शरीर को सभी प्रकार की सुख सुविधाएँ भौतिक विज्ञान ने उपलब्ध करा दीं, परन्तु संसार के मानव को सुख और शान्ति फिर भी नहीं मिली। ज्यों-ज्यों विज्ञान उन्नति करता गया, अशान्ति बढ़ती ही गई। आज जो वस्तुस्थिति संसार की है, उसने विज्ञानवेताओं को गहराई से सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। आज वैज्ञानिक दबी जुबान से यह स्वीकार करने लगे हैं कि ज्ञान प्राप्त करने के भौतिक साधनों के अतिरिक्त अन्य साधन भी हैं।

यह एक शुभ संकेत है। 'सच्चाई पसन्द' और 'सच्चाई परख' लोग ही इस दिशा में तरक्की करके संसार को कुछ दे सकेंगे। बाकी जिन आध्यात्मिक गुरुओं से संसार के लोग उम्मीद लगाए बैठे थे, उनसे लोग निराश हो चुके हैं। थोथा उपदेश, कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, स्वांग, शब्द जाल, तर्कशास्त्र और अन्धविश्वास से लोग पूर्ण रूप से निरुत्साहित हो चुके हैं। इसके विपरीत जिन-जिन देशों ने वैज्ञानिक उन्नति की है, वहाँ अशान्ति और हिंसा के ताण्डव नृत्य ने लोगों को भयभीत कर दिया है।

अतः उनको भी इस पथ के अलावा शान्ति प्राप्त करने का दूसरा रास्ता खोजना पड़ रहा है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

आओ उस ज्योति में पहुँचे जो स्वर लोक की है,

संसार के प्रायः सभी धर्म संसार की उत्पत्ति 'शब्द' से मानते हैं। इस सम्बन्ध में वेद स्पष्ट कहता है-"आओ उस ज्योति में पहुँचे जो स्वर लोक की है, उस ज्योति में जिसे कोई खण्ड खण्ड नहीं कर सकता।" वेद स्पष्ट कहता है कि जिस ज्ञान को (आनन्द को) तामसिक वृतियों ने कैद कर रखा है, उसकी मुक्ति केवल "प्रकाशप्रद शब्द" से ही सम्भव है। वेद बारम्बार उस प्रकाशप्रद शब्द से जो दिव्य प्रकाश निकलता है, उससे मिलने वाले दिव्य आनन्द की प्रार्थना करता है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने वेद रहस्य में लिखा है :- वैदिक द्रष्टाओं ने प्रेम पर ऊर्ध्व से अर्थात् इसके स्रोत और मूल स्थान से दृष्टिपात किया और उन्होंने अपनी मानवता में उसे दिव्य आनन्द के प्रवाह के रूप में देखा और ग्रहण किया। मित्र देव के इस आध्यात्मिक वैश्व आनन्द को वैदान्तिक आनन्द अर्थात् वैदिक मयस् की व्याख्या करती हुई तैत्तिरीय उपनिषद् इसके विषय में कहता है कि "प्रेम इसके शीर्ष स्थान पर है।" परन्तु प्रेम के लिए वह जिस शब्द 'प्रियम्' को पसंद करती है, उसका ठीक अर्थ है आत्मा के आंतरिक सुख और संतोष के विषयों की आनन्ददायकता। वैदिक गायकों ने इसी मनोवैज्ञानिक तत्त्व का उपयोग किया है। उन्होंने मयस् और प्रयस् का जोड़ा बनाया है।

मयस् है सब विषयों से स्वतंत्र आन्तरिक आनन्द तत्त्व और प्रयस है पदार्थ और प्राणियों में आत्मा को मिलनेवाले हर्ष और सुख के रूप में उस आनन्द का बहि-प्रवाह। वैदिक सुख है यही दिव्य आनन्द जो अपने साथ पवित्र उपलब्धि का और सब पदार्थों में निष्कलंक सुख के अनुभव का वरदान लाता है। आज संसार से वह प्रकाशप्रद शब्द जिसके दिव्य प्रकाश से दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है, कहाँ चला गया।

जब तक हम संसार में इसकी भौतक रूप से प्रत्यक्षानुभूति नहीं करवा देते, काम चल ही नहीं सकता है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

नाम खुमारी एक सच्चाई है।

मैं देख रहा हूँ, इस युग के मानव जब कबीर और नानक की 'नाम अमल' और 'नाम खुमारी' की बात सुनते हैं, या पढ़ते हैं तो उन्हें इस बात पर बिल्कुल ही विश्वास नहीं होता। अपने ज्ञान के अनुसार वे इस बात को ईश्वर के लिए श्रद्धा से काम में लिए हुए अतिश्योक्ति अलंकार के अतिरिक्त कुछ भी मानने को तैयार नहीं।

मैं लोगों की इस मान्यता के लिए उन्हें दोष नहीं दे सकता हूँ। क्योंकि आध्यात्मिक जगत्, सात्त्विक शक्तियों के ह्रास के कारण ही संसार के मानव की यह स्थिति है।

मनुष्य ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। उस परमसत्ता की अभिव्यक्ति मात्र इसी योनि से सम्भव है। मानव शरीर में ही वह असीम सत्ता अपने पूर्ण विकसित स्वरूप में स्थित है। इसीलिए सभी संतों ने इस योनि को दुर्लभ बताया है। परन्तु युग के गुण-धर्म के कारण असहाय मानव इसका स्वाद नहीं चख पाने के कारण इसको मात्र काल्पनिक या अतिशयोक्ति समझ रहा है। मैंने करीब तीन हजार पर्चे प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार तथा नाम खुमारी के बँटवाये। पर्चे के अन्त में यह बात स्पष्ट रूप से छापी गई थी कि:-

''जो भी भाई-बहिन प्रत्यक्षानुभूति और नाम खुमारी के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा शान्त करना चाहे, स्वयं सत्संग में सम्मिलित हो कर देखें।'' मुझे यह देख कर अचम्भा हुआ कि स्वामी राम सुख दास जी के प्रवचन सुनने वाले को इसका विश्वास नहीं हुआ। मात्र एक जिज्ञासु ही मेरे पास आ सका। परन्तु जो एक जिज्ञासु आया, मैं उससे पूर्ण सन्तुष्ट हूँ। वह इस पथ का राही होना, इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मात्र भारत में ही उस परमसत्ता की आखिरी चिन्गारी बची हुई है, जिसको प्रज्वलित करके संसार भर में वह सात्त्विक प्रकाश फैलाया जा सकता है।

मुझे जो स्पष्ट इशारा था, वह सही निकला कि, यह प्रकाश सर्वोच्च लोक से आ रहा है, अतः पहले उन्हीं लोगों को चेतन करेगा। इस प्रकार संसार के शक्ति सम्पन्न बुद्धिजीवी लोग जब इस प्रकाश से चेतन होंगे तो नीचे इसका प्रकाश सहज ही फैल जायेगा। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियाँ और उस परमसत्ता का आदेश ठीक मेल खा रहा है। देश में जो तमस व्याप्त है, उसके बारे में श्री अरविन्द ने लिखा है:-

''यह कई कारणों से है। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आने से पहले ही तामसिक प्रवृतियों और छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों का जोर हो चला था। उनके आने पर मानो सारा तमस् ठोस बनकर, यहाँ जम गया।

कुछ वास्तविक काम होने से पहले यह जरूरी है कि यहाँ जागृति आये। तिलक, दास और विवेकानन्द इनमें से कोई साधारण आदमी न थे, लेकिन इनके होते हुए भी तमस् बना हुआ है।''। महर्षि अरविन्द की उपर्युक्त बात से यह बात स्पष्ट होती है कि ''अन्धकार इतना ठोस बन कर जम गया है कि उस अधिमानसिक देव के अवतरण के अलावा अब इसका कोई इलाज नहीं बचा है।'' मेरे विचार से भी इस प्रकाश का सबसे पहले भारत में फैलना जरूरी है। श्री अरविन्द को भगवान् ने अलीपुर जेल से छूटने से पहले जो आदेश दिया था, उसका भी यही अर्थ निकलता है। भगवान् का आदेश था कि:-''तुम बाहर जाओ तो अपने देश वासियों को कहना कि तुम सनातन धर्म के लिए उठ रहे हो, तुम्हें स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, अपितु संसार की भलाई के लिए उठाया जा रहा है। जब कहा जाता है कि भारत वर्ष महान् है तो उसका मतलब है कि सनातन धर्म महान् है।

इससे स्पष्ट है कि संसार को आकर्षित करने के लिए, पहले भारत का उठना, चेतन होना जरूरी है, इसके बिना संसार को चेतन करना बहुत कठिन काम है। हम देखते हैं कि हमारे आम देशवासियों की एक प्रवृत्ति बन

www.the-comforter.org

गई है कि वे पश्चिमी जगत् की आँख बन्द करके नकल करने में लगे हैं। दूसरी तरफ पश्चिमी जगत् के लोग भारत की गलियों की खाक छानते हुए शान्ति की खोज कर रहे हैं। बहुत ही विचित्र स्थिति है। जिस अपार सात्विक धन के हम मालिक हैं, उन्हें तो इसका कुछ भी ज्ञान नहीं, और समुद्रों पार से आकर विदेशी उसकी खोज कर रहे हैं, बहुत ही अजीब स्थिति है। मुझे अच्छी तरह याद है, ऋषिकेश में मुनि की रेति में गंगा के किनारे मैं खड़ा था। इतने में कुछ विदेशी भगवा वस्त्र पहने, वहाँ आकर खड़े हो गये। थोड़ी ही देर में कोट पेन्ट धारी कुछ सज्जन सपरिवार वहाँ आ गये। उनमें से एक सज्जन ने अंग्रेजी भाषा में उन विदेशियों से बात शुरू कर दी। क्योंकि मैं भी पास ही खड़ा था, इस लिए मैं भी सुनने लग गया।

हिन्दुस्तानी सज्जन ने कहा कि "आप लोग बहुत समझदार और सभ्य लोग हैं, आप इन ठगों के चक्कर में कैसे फँस गये? ये लोग केवल आप लोगों से धन ठगने के लिए, विभिन्न प्रकार के स्वांग रच रहे हैं। इनके पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जिसके लिए आप ठगाये जा रहे हो"। इस पर एक विदेशी बोला "आप क्या कह रहे हो, मुझे समझ नहीं आ रहा है। ऐसा लगता है आप पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। क्या आपने इन संन्यासियों के पास आकर कभी जानने का प्रयास किया कि ये क्या कर रहे हैं? मैं देख रहा हूँ हमारा दैनिक जीवन में जो खर्च होना चाहिए उससे एक पैसा भी अधिक नहीं लिया जा रहा है।

मैं जब हमारे देशवासियों की यह हालत देखता हूँ तो बहुत हैरानी होती है।

हमारे देश के सभ्य और साधन सम्पन्न लोग पूर्ण रूप से धर्म से विमुख हो चुके हैं। जब तक उन्हें प्रत्यक्षानुभूति, साक्षात्कार और नाम खुमारी की अनुभूति नहीं करवाई जाती, चेतना असम्भव है।

शरीर के जिस अंग में बीमारी होती है, डॉक्टर चीर-फाड़ द्वारा उसी अंग का इलाज करते हैं, तभी पूरा शरीर स्वस्थ होता है। अतः हमें पहले इन्हीं बीमार लोगों का इलाज करना है, तभी चेतना सम्भव है। हम देख रहे हैं, हमारे देश के प्रायः सभी राजनेता, वाम मार्गी तामसिक तांत्रिकों के चक्कर में पड़े हुए हैं। ऐसे अनेक तामसिक तांत्रिक राज सत्ता का भयंकर दुरुपयोग करके अपनी काली शिक्षा का प्रसार-प्रचार करके देश में अन्धकार फैला रहे हैं। इस प्रकार समाज का जो वर्ग इन तामसिक लोगों के चक्कर में है तथा जो इन ढोंगियों से तंग आकर धर्म से विमुख हो चुका है, सर्वप्रथम उनका इलाज किये बिना देश में चेतना असम्भव है। पश्चिमी जगत् के लोग सच्चाई को परखने और स्वीकार करने में कभी नहीं झिझकते। सबसे कठिन काम तो पूर्वाग्रह से ग्रस्त तथाकथित सभ्य और सम्पन्न लोगों का इलाज करना है। इनका इलाज होने पर पूरा शरीर स्वस्थ हो जायेगा। सत्ता धारी और इन सम्पन्न और सभ्य लोगों की कोई अधिक संख्या नहीं है।

जब वह परमसत्ता सक्रिय रूप से संसार के सामने प्रकट होकर, अपना कार्य शुरू कर देगी तो अन्धकार के दूर होने में कोई देर नहीं लगेगी। मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि हर परिवर्तन का समय सुनिश्चित है। समय आने पर सारी परिस्थितियाँ अनुकूल होकर थोड़े प्रयास से सारे कार्य सम्पूर्ण हो जायेंगे।

–समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
1 मार्च 1988

www.the-comforter.org

'परिवर्तन' प्रकृति का अटल सिद्धान्त है।

'परिवर्तन' प्रकृति का अटल सिद्धान्त है। कोई भी शक्ति इसे प्रभावित नहीं कर सकती है। यह क्रम अनादि काल से चलता आया है। अतः निराशा का कोई कारण नहीं। अंधेरे और प्रकाश का संघर्ष हमारे अन्दर अनादि काल से चला आ रहा है। रात्रि के देवता कभी नहीं चाहते कि प्रकाश हो परन्तु फिर भी रात और दिन का क्रम अनादि काल से चला आ रहा है।

हमें खुले दिल से हमारी कमजोरी को स्वीकार करके आध्यात्मिक जगत् में शोध कार्य प्रारम्भ करने चाहिए, जिस प्रकार भौतिक विज्ञान तत्काल परिणाम देना प्रारम्भ कर देता है उसी प्रकार उसका जनक अध्यात्म विज्ञान भी परिणाम देता है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

हीरे का मूल्य

एक बुद्धिमान् जौहरी था। अपने काम में वह बड़ा निपुण था।देवयोग से युवावस्था में ही वह मर गया। पीछे उसकी स्त्री तथा गोद में एक बालक रह गया। लोगों ने उनके पैसे दबा लिये।धन नष्ट हो गया।उस स्त्री के पास एक हीरा था, जो उसको जौहरी ने दिया था। वह हीरा बहुत कीमती था। जब उसका बालक पन्द्रह-बीस वर्ष का हो गया, तब उसने बालक से कहा कि बेटा ! देखो, तुम्हारे पिताजी ने यह हीरा दिया था। उन्होंने इसका मूल्य नहीं बताया, प्रत्युत इसको अमूल्य बताया है। इसका मूल्य कोई करेगा तो उसकी बुद्धि का मूल्य होगा, हीरे का मूल्य नहीं होगा अर्थात् जैसी उसकी बुद्धि होगी, वैसी ही वह कीमत बताएगा। इस हीरे को लेकर तुम जाओ और इसका मूल्य करा लाओ, पर इसको बेचना नहीं।

वह लड़का हीरा लेकर बाजार गया। पहले वह एक सब्जी बेचनेवाली के पास गया और हीरा दिखाकर पूछा कि इसका क्या मूल्य दोगी? वह बोली कि दो मूली ले लो, बच्चों के खेलने के लिये अच्छी चीज है ! वह लड़का बोला कि देना नहीं है। आगे जाकर बहुतों से पूछा तो किसी ने दो रुपये कहे, किसी ने तीन रुपये कहे। आगे एक सुनार के पास गया तो उसकी कीमत दस,बीस,पचास रुपये तक लग गयी।फिर जौहरी के पास गया तो पाँच सौ,सात सौ,एक हजार रुपये तक कीमत हो गयी। वह लड़का ज्यों-ज्यों अच्छे जानकार आदमी के पास गया, त्यों-त्यों उसकी कीमत बढती चली गयी। वह हीरे के एक अच्छे परीक्षक के पास गया तो उसने मूल्य एक लाख रुपये तक बताया। लड़के को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह हीरा बड़ा विचित्र है ! लोगों से पूछते-पुछते वह एक बहुत बूढ़े जौहरी के पास पहुँचा, जो बड़ा ईमानदार और हीरे का अच्छा पारखी था। उसको हीरा दिखाया तो उसने लड़के की तरफ देखा और कहा-अरे ! यह हीरा तेरे पास कहाँ से आया? लड़के ने कहा- मेरे पिताजी ने दिया था।

'तुम्हारे पिताजी कौन ?'

'अमुक नाम के हीरे के व्यापारी थे।'

'उनका नाम तो हमने पहले भी सुना था,अब बहुत दिनों से उनके बार`में सुना नहीं, क्या बात है ?'

'उसका शरीर शान्त हो गया'

'अहो ! वे तो बड़े नामी पारखी थे !'

'मैं उनका ही बेटा हूँ। इस हीरे की क्या कीमत दोगे ?'

'इसकी कीमत नहीं है, यह अमूल्य हीरा है !

इसी प्रकार यह मनुष्य जीवन भी अमूल्य है।इस जीवन में कोई भी भौतिक सुख या भौतिक उचाईयाँ जैसे नाम, शोहरत, रूपया-पैसा, ताकत इत्यादि इसकी कीमत नहीं हो सकती है।मनुष्य जीवन रहते हुए ईश्वर प्राप्ति ही इसका सही मोल है अन्यथा सब व्यर्थ है।इसलिए समय रहते हम सब को गुरुदेव के बताए अनुसार संजीवनी मंत्र का जाप और ध्यान करते हुए अपने इस अमूल्य जीवन को सफल बनाने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

◆◆◆

मातृ शक्ति

www.the-comforter.org

जब उन्हें अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ कहीं भी दखल देने का अवसर मिलता है तब वे 'सब बाधाएँ' जो साधक को 'पंगु' बना देती हैं, एक क्षण भर में नि:सार पदार्थों के समान नष्ट हो जाती हैं और वे सब 'शत्रु' भी मृतप्राय: हो जाते हैं जो साधक पर 'आक्रमण' किया करते हैं।

यह मानो किसी क्षिप्र, आकस्मिक, सुनिश्चित और अनिवार्य वस्तु के रूप में अनुभूत होता है। जब यह हस्तक्षेप करता है, तब इसके पीछे एक प्रकार की 'भागवत' या आतिमानसिक स्वीकृति होती है और यह एक 'अन्तिम आज्ञा' के जैसा होता है, जिसके विरूद्ध कोई अपील नहीं चलती। जो कुछ किया जा चुका है, वह न तो उलटा जा सकता है और न ही मिटाया जा सकता है। विरोधी शक्तियाँ कोशिश कर सकती हैं यहाँ तक कि 'छू' सकती या चढ़ाई कर सकती हैं पर 'घबराकर' लौट जाती हैं, और ज्योंही वे पीछे हटती हैं, पुराना मैदान जैसा का तैसा सुरक्षित दिखाई पड़ता है। आक्रमण के समय भी यह अनुभव रहता है। वे 'कठिनाइयाँ' भी जो इससे पहले प्रबल थीं, वह इस निर्णय के छू देने से अपनी शांति खो बैठती हैं। उनकी सम्भावना नष्ट हो जाती है अथवा वे दुर्बल छाया सी रह जाती हैं, जो केवल टिमटिमाने और बुझ जाने के लिए ही आती हैं।

–श्री अरविन्द, पुस्तक– 'माँ'

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा हैं।

ईश्वर आराधना के बिना मोक्ष नहीं

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है कि ब्रह्मलोक तक के सभी लोक पुनरावर्ती स्वभाववाले हैं। गीता के ८वें अध्याय के १६वें श्लोक में भगवान् ने कहा है :-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ।।१६।।

हे अर्जुन, ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र मेरे को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता। इसे और स्पष्ट करते हुए भगवान् ने ९वें अध्याय के २५वें श्लोक में कहा है:-

यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ।।

देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों के पूजनेवाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, (और) मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं।

इतना स्पष्ट होने पर भी इस युग का मानव समझ नहीं पा रहा है, और विभिन्न प्रकार के देवताओं के चक्कर में फंसा पड़ा है। मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्रपर्यन्त सभी आराधनाएं निकृष्ट श्रेणी में आती हैं। आज्ञाचक्र का भेदन गुरुकृपा के बिना सम्भव नहीं है। अतः आध्यात्म जगत में संत सतगुरु की कृपा के बिना चलना असम्भव है। इस कलियुग का मानव युग के गुण धर्म के कारण गुरु-शिष्य परम्परा में विश्वास नहीं करता। इसके अलावा इस युग में सात्विक संतों का नितान्त अभाव हो चला है। कपटी गुरुओं से ठगाते २ इस युग के मानव का गुरु भाव पूर्ण रूप से समाप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में संसार के जीवों का कल्याण असम्भव हो चला है। ईश्वरीय शक्ति के अवतरण के बिना अब काम चलने वाला नहीं

रामलाल
०६.५.८८

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

1996

JANUARY

भारत में अन्धेरा ठोस बनकर जम गया है।

निश्चित रूप से भारत तामसिक शक्तियों से पूर्णरूप से जकड़ा हुआ है। जिस प्रकार गज (हाथी) समुद्र में डूबने लगा था, उसी प्रकार भारत अन्धकार में डूब रहा है। और जिस प्रकार गज की करुण पुकार पर सुदर्शन-धारी ने उसे मुक्त किया था, भारत भी मात्र उसी उपाय से बच सकता है।

भारत को आजाद करना पश्चिम की मजबूरी थी। यही कारण है वे शक्तियाँ भारत के दो टुकड़े कर गयी और वे शक्तियाँ आज एक और विभाजन के लिए पूर्णरूप से प्रयासरत हैं। उन्होंने लगभग सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत को ईसाई बनाने का षड्यंत्र रचा हुआ है ताकि भारत का एक और विभाजन कर सके।

दूसरी तरफ देश को आर्थिक जाल में बुरी तरह से जकड़ रखा है। आज देश को आय का 1/3 भाग ब्याज में देना पड़ रहा है। क्या कोई व्यवसाय 33% की दर से रकम उधार लेकर पनप सकता है? कभी नहीं।

तीसरे विभाजन की कोशीश मध्य-पूर्व की शक्तियाँ कर रही हैं। वे पश्चिमोत्तर भारत को भारत से अलग करने का पूर्ण प्रयास कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त उपरोक्त दोनों शक्तियों ने सम्पूर्ण देश में भाषा, धर्म, जाति और क्षेत्रिय भावनाओं को भड़का कर सम्पूर्ण देश का वातावरण अशान्त बना रखा है। ऐसी स्थिति में देश के बचने का एक ही आधार है- "धर्म"। क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने महर्षि श्री अरविन्द को अलीपुर जेल में कहा था - " भारत, धर्म के द्वारा और धर्म के लिए ही अस्तित्व में है।"

भारत का सिद्धान्त है 'अहिंसा परमो धर्मः'। इस देश और इस धर्म को हिंसा से कभी नष्ट किया ही नहीं जा सकता। इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने ब्रुकलीन में 27-2-1895 में कहा था - " भारत का संदेश है कि शान्ति, शुभ, धैर्य और नम्रता की अन्त में विजय होगी। क्योंकि वे यूनानी कहाँ हैं, जो एक समय पृथ्वी के स्वामी थे? समाप्त हो गये। वे रोमवाले कहाँ हैं जिनके सैनिकों की पद-चाप से संसार काँपता था? मिट गये। वे अरबवाले कहाँ हैं, जिन्होंने पचास वर्षों में अपने झण्डे अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महासागर तक फहरा दिये थे। और वे स्पेन वाले करोड़ों मनुष्यों के निर्दयी हत्यारे कहाँ हैं? दोनों जातियाँ लगभग मिट गई। परन्तु अपनी संतान की नैतिकता के कारण यह दयालु जाति कभी नहीं मरेगी, और वह फिर अपनी विजय की घड़ी देखेगी।"

इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने भी कहा था - " भारत सच्ची स्वतन्त्रता - राजनैतिक अस्त्रों के माध्यम से नहीं बल्कि अध्यात्मिक उन्नति के द्वारा प्राप्त करेगा।"

इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने भी कहा है -
" भारत का प्राण "धर्म" है, भाषा "धर्म" है तथा भाव "धर्म" है।"

[illegible]
31 मार्च, 1997, जोधपुर

'Yug Parivartan'

(Change of Epoch)

'Yug Parivartan' (change of Epoch) is related to the entire world. It is not related to the awakening of consciousness in any one particular part of the world. Transformation of an epoch is impossible without the descent of the Supreme Power. This has been going on since time immemorial. I can see that from the beginning of my life, 'tamsik' (dark) forces have been constantly attacking me. Initially they tried to get rid of me by frightening me. When they didn't succeed in this then they tried to lure me. When I was a child, they tried to scare me and when I was young, they tried to entice me.

When these gimmicks didn't work, they are now trying to mislead me by playing the role of a well wisher. I can see that their this weapon is also going to fail. Their next step would be to defame me. I am well aware of this and this last weapon is going to work in my favour because by their opposition, the speed with which I will get publicity will become very fast. Because of this, these tamsik (dark) powers will lose their balance. Their loss of balance means their end. These are the pictures of the incidents that will occur in future and are mandatory. Not a tiny amount of change is possible in this as my area of work is universal. The extent of darkness which is there is India is nowhere else.

If my area of work would have been limited only to India then it would have been more difficult as the power of 'tamsik' forces is limited where as the power of 'Sattvic' forces is unlimited. In this relation, Shri Maa has clearly said, "All the problems of the world have got centralised in India.

The burden of the entire earth will lessen once these are resolved." Countless 'tamsik'(Dark) powers are robbing the people by misleading them in the garb of being 'Sattvik' (goodness). I have been clearly told that the power of these 'Tamsik' forces has diminished.

They will be defeated after projecting a mild opposition. Those clever people, who have made religion their business, are going to oppose more. Because my area of work is the entire earth, their deeds will be revealed in front of the world. People have become completely disinclined towards a worship which doesn't give any evident outcome. The people of this era don't believe in waiting for the next birth to get results. People want result and direct experience of what ever they do.

In this age, mostly all the religions are based on outward worship which is limited to performing rituals. It is impossible to get any results from this. Some worships are inward oriented but their area is limited to the field of 'Maya' (Illusory energy of God) below the 'Agyachakra'. It is clearly written in our scriptures that the field of 'Maya' extends from 'Mooladhar' till 'Agyachakra'. It is possible to get worldly benefits from this but it is impossible to get any spiritual benefits. It is only by piercing the 'Agyachakra' that one can enter the pure spiritual world.

Bhagwan Shri Krishna has clearly said in the 16th verse of the eighth chapter in the Geeta (ancient Indian scripture) that from Brahmlok onwards all the other 'lokas' are such that one has to take birth again but Oh dear son of Kunti (addressing the great warrior Arjun), there is no rebirth after one has attained me.

People who are associated with me are getting clear results. Because this is the effect of the power of the Supreme Lord whose field is universal that is why any particular religion or caste doesn't have any monopolistic right over it. I have been clearly told that this Power is emerging for the welfare of the entire world. That is why it will be publicised at the world level but its centre will certainly be India.

-Gurudev Shri Ramlal Ji Siyag
(19.06.88)

सत्संग का प्रभाव

इस युग में सत्संग को मानव समझ ही नहीं पा रहा है। कई लोग रात भर जागते रह कर भजन, कीर्तन करने को सत्संग कहते हैं। कई लोग कथा, उपदेश आदि में सम्मिलित होने को सत्संग कहते हैं। परन्तु सत्संग का सही अर्थ और प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में लोगों को अभी मिल ही नहीं रहा है।

सत् और असत्, प्रकाश और अन्धेरा दो विपरीत शक्तियाँ (भाव) हैं। दोनों कभी साथ रह ही नहीं सकते। उजाला होते ही अन्धेरा भाग जायेगा। जहाँ सत् प्रकट हो जायेगा वहाँ असत् टिक ही नहीं सकता। इसका स्पष्ट मतलब है कि इस समय संसार के मानव जिसको सत्संग की संज्ञा दे रहे हैं, वह सत्य से बहुत दूर है।

मैं आम लोगों से प्रायः सुनता रहता हूँ कि आज अमुक महात्मा का सत्संग है, उपदेश है। मैं कभी-कभी पूछ लेता हूँ कि अमुक महात्मा, पिछले सालों से आज तक लाखों लोगों को उपदेश दे चुके होंगे, बताइये कितने प्रतिशत लोग परिवर्तित हुए? प्रायः एक ही उत्तर मिलता है कि इसमें महाराज का क्या दोष है, कलियुग के मानव ही भ्रष्ट हैं। इस प्रकार लाखों लोगों को क्षण भर में दोषी कह दिया जाता है। बेचारे अपना समय और धन नष्ट करके दूर-दूर से आते हैं, और कैसी दुर्गति होती

है इनकी। कभी किसी ने महात्मा जी पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाकर जानने का प्रयास ही नहीं किया कि कहीं जड़ में तो दोष नहीं है।

मुझे इस सम्बन्ध में किसी संन्यासी ने एक किस्सा सुनाया था। सर्दी का मौसम था। एक चौधरी अपने 10-11 साल के पुत्र को लेकर अपने ही गांव के एक महात्मा के पास गया और बोला, महाराज यह लड़का गुड़ बहुत खाता है। बहुत मना करने पर भी मानता नहीं है। कृपया आप इसे कुछ उपदेश दें तो शायद मान जाए। उस महात्मा ने कहा, उसे 15 दिन बाद मेरे पास लाना। 15 दिन बाद वह चौधरी फिर लड़के को ले गया तो महाराज ने अधिक गुड़ खाने की हानि बताकर गुड़ खाने से मना किया। लड़के ने उस दिन से गुड़ खाना छोड़ दिया। कुछ दिन बाद चौधरी उस महात्मा के पास गया और बोला महाराज इतनी सी बात कहनी थी तो पहले ही कह देते, मेरा 15 दिन गुड़ और क्यों बर्बाद होने दिया।

महाराज ने कहा भाई उस दिन तक मैं भी गुड़ खाया करता था। अतः मेरी बात का उस लड़के पर कुछ भी असर नहीं होता। आपके प्रथम बार आने के बाद मैंने गुड़ खाना बिलकुल बन्द कर दिया। इसलिए 15 दिन बाद मेरी बात का उस लड़के पर असर हुआ और उसने गुड़ खाना छोड़ दिया। मैंने महाराज से यही प्रश्न किया था कि आज के युग के धर्म गुरुओं का प्रभाव क्यों नहीं हो रहा है? इस पर महाराज ने उपर्युक्त उदाहरण देकर कहा कि इसमें हम ही दोषी हैं। संसार के लोगों का दोष नहीं। वह महात्मा जसनाथी (सिद्ध समुदाय का) था। मेरी मुलाकात पलाना रेलवे स्टेशन पर ट्रेन का इन्तजार करते समय हुई थी। वह साधु बरसिंगसर में रहता है। श्री सागरनाथ जी के साथ बीकानेर स्टेशन पर आया था। मुझे पहला व्यक्ति मिला जिसने सच्ची बात कही। मैं देखता हूँ गुरुदेव के पास जाने वाले सभी व्यक्ति शराब और मांस का स्वतः ही त्याग कर देते थे। उनके स्वर्गवास के बाद मुझ से जुड़ने वाले लोग भी शराब, मांस आदि तामसिक वस्तुओं का स्वतः ही त्याग कर रहे हैं, और जो ऐसा नही कर सकते वे दो चार बार आकर आना बन्द कर देते हैं। फिर मेरे पास आने की हिम्मत ही नहीं होती। सच्चाई का असर इतना स्थाई और गहरा होता है कि एक बार जिज्ञासु बनकर आने वाला जीवन भर उस अनुभूति को नहीं भूल सकता।

सत्संग का मतलब सच्चाई का संग करने से है। जिस प्रकार आग के पास जाने से गर्मी महसूस हुए बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार से सत्संग का असर होता है। सच्चा गुरु उस परम चेतन सत्ता से सीधा सम्पर्क रखता है। अतः ज्यों ही आपके हृदय के तार उनसे जुड़े कि आपमें वह सात्विक प्रकाश प्रकट होने लगेगा। ज्यों-ज्यों उनका सानिध्य और प्रेम बढ़ता जाएगा, प्रकाश स्पष्ट और तेज होता जाएगा। इस प्रकार जीव ज्यों-ज्यों उस परमसत्ता के करीब जाता जाएगा, आकर्षण और गति निरन्तर तेज होती जाएगी। यह होता है सत्संग का प्रभाव। इससे भिन्न सब धोखा है।

–समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
25.04.88

www.the-comforter.org

जाति परिवर्तन संभव

जाति से ब्राह्मण होना और गुणों से ब्राह्मण होना–ये दो भिन्न बाते हैं। भारत में ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से ही कोई ब्राह्मण कहलाने लगता है, पर पश्चिम में यदि कोई ब्राह्मण गुण से युक्त हो तो उसे ब्राह्मण मानना चाहिए। जिस प्रकार सत्त्व, रज व तम तीन गुण हैं, उसी प्रकार ऐसे गुण हैं जिनसे युक्त होने पर, मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय ,वैश्य और शूद्र होता है। दुर्भाग्यवश आज इस देश में क्षत्रिय एवं ब्राह्मण गुणों का पतन हो रहा है, पर पश्चिम के देशों में लोग क्षत्रियत्व तक पहुँच चुके हैं, और क्षत्रियत्व से एक सीढ़ी आगे ही तो ब्राह्मणत्व है। उनमें से कई लोगों ने तो ब्राह्मण कहलाने की योग्यता भी प्राप्त कर ली है।

क्या जो स्वभाव से सात्त्विक हैं, वे ही ब्राह्मण है ? निश्चित रूप से, जैसे हर एक व्यक्ति में सत्त्व, रज और तम, तीनों ही गुण न्यूनाधिक अंश में वर्तमान हैं, उसी प्रकार ब्राह्मण एवं क्षत्रिय आदि के गुण भी सब मनुष्यों में जन्मजात ही न्यूनाधिक मात्रा में विद्यमान रहते हैं। समय समय पर उनमें से एक न एक गुण अधिक प्रबल होकर, उनके कार्यकलापों में प्रकट होता रहता है। आप मनुष्य का दैनिक जीवन क्रम लें–जब वह अर्थ–प्राप्ति के लिए किसी की सेवा करता है तो वह शूद्र होता है। जब वह स्वयं अपने काम के लिए कोई क्रय–विक्रय करता है तो उसकी वैश्य संज्ञा हो जाती है। जब वह अन्याय के विरूद्ध अस्त्र उठाता है तो उसमें क्षत्रिय भाव सर्वोपरि होता है और जब वह ईश्वर चिन्तन में लगता है, भगवान् का कीर्तन करता है तो ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है। यह स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए एक जाति से दूसरी जाति में चला जाना संभव है। यदि नहीं तो विश्वामित्र ब्राह्मण कैसे बन सके, और परशुराम क्षत्रिय कैसे बन सके ?

–स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

–महर्षि श्री अरविन्द

साधना की दो गतियों के बीच में सर्वदा ही तैयारी करने तथा परिपाक करने के लिये विराम-काल आया करते हैं। इन्हें साधनामार्ग की अवांछित खाइयाँ समझकर तुम्हें इनके कारण न तो झुंझलाना चाहिये, न अधीर होना चाहिये। इसके अतिरिक्त, दिव्य शक्ति ऊपर उठती है और प्रकृति के एक भाग को उच्चतर स्तर में उठा ले जाती है और फिर निम्नतर भाग को ऊपर उठा ले जाने के लिये नीचे उतर आती है।

यह आरोहण और अवरोहण की गति प्राय: ही अत्यंत दु:खदायी होती है, क्योंकि मन एक सीधी रेखा में ऊपर जाने का पक्षपाती होने और प्राण तेजी से फल पाने के लिये उत्सुक रहने के कारण दोनों ही इस जटिल गतिधारा को समझने या अनुसरण करने में असमर्थ होते हैं और इसलिये स्वभावत: ही वे इससे झुंझलाते या दु:खी होते हैं। परंतु संपूर्ण प्रकृति का रूपांतर साधित करना कोई आसान काम नहीं है और जो दिव्य शक्ति कार्य कर रही है वह हमारे मानसिक अज्ञान या प्राणगत अधैर्य की अपेक्षा इस कार्य को बहुत अच्छी तरह से जानती है।

यदि साधक में एक ऐसे केंद्रीय संकल्प का अभाव है जो सर्वदा प्राकृतिक शक्तियों की लहर से ऊपर रहता है, जो सदा श्रीमां के संस्पर्श में रहता है, जो अपने मूल लक्ष्य और अभीप्सा का अनुसरण करने के लिये प्रकृति को बाध्य करता है, तो यह उसके योग की एक बहुत बड़ी बाधा है। ऐसा होने का कारण यह है कि तुमने अभी तक अपनी केंद्रीय सत्ता में निवास करना नहीं सीखा है; तुम्हें इस बात का अभ्यास है कि चाहे जिस किसी प्रकार की शक्ति क्यों न हो, जहाँ उसकी कोई लहर तुम्हारे ऊपर चढ़ आयी कि तुम तुरत उसी में बह जाते हो और उस समय के लिये उसीके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हो। यह चीज उन सब चीजों में से एक है जिन्हें तुमने पहले सीखा था पर जिन्हें तुम्हें भूलना होगा। तुम्हें अपनी केंद्रीय सत्ता को, जिसका आधार हृत्पुरुष है, ढूंढ़ निकालना होगा

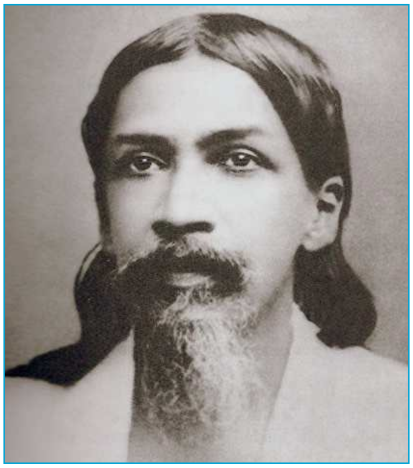

और उसीमें निवास करना होगा।

यह युद्ध चाहे जितना भी कठिन क्यों न हो, एकमात्र उपाय यही है कि तुम अभी और यहीं यह युद्ध लड़कर इसे समाप्त कर दो।

कठिनाई यह है कि तुमने कभी अपनी सच्ची बाधा का पूरी तरह से मुकाबला नहीं किया और न उसपर विजय प्राप्त की। तुम्हारी प्रकृति के एकदम मूल में ही एक जगह अहंभावापन्न व्यक्तित्व की एक सदृढ़ मूर्ति गठित हुई है और उसी ने तुम्हारी आध्यात्मिक अभीप्सा के अंदर दुराग्रही अभिमान और आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षा का भाव मिला दिया है। इस मूर्ति ने इस बात के लिये कभी अनुमति नहीं दी है कि उसे तोड़ दिया जाये और उसके स्थान में किसी और अधिक सत्य तथा दिव्य वस्तु को बैठा दिया जाये।

अतएव जब-जब श्रीमां ने तुम्हारे ऊपर शक्ति का प्रयोग किया है अथवा जब-जब तुमने स्वयं शक्ति को अपने ऊपर उतारा है तब-तब तुम्हारे भीतर की इस चीज ने उस शक्ति के अपने ढंग से कार्य करने में बाधा उपस्थित की है। इस चीज ने मन की धारणाओं के अनुसार या अहंकार की किसी मांग के अनुसार स्वयं कुछ निर्माण करना आरंभ कर दिया है और यह इस बात की चेष्टा करती है कि यह स्वयं अपनी ही शक्ति से, अपनी ही साधना, अपनी ही तपस्या के द्वारा, अपने "निजी तरीके से" एक अपनी ही सृष्टि की रचना करे।

तुम्हारे इस भाग ने कभी सच्चा समर्पण नहीं किया है, इसने कभी सहज और सरल भाव से अपने आपको श्रीभगवती माता के हाथों में नहीं सौंपा है और वास्तव में इस अतिमानस-योग में सफलता प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यही है। इस योग का उद्देश्य योगी, संन्यासी, तपस्वी बनना नहीं है। इसका उद्देश्य है रूपांतर, और यह रूपांतर केवल उस शक्ति के द्वारा ही सिद्ध हो सकता है जो तुम्हारी अपनी शक्ति से अनंतगुना महान् है; यह केवल उसी समय सिद्ध हो सकता है जब तुम भगवती माता के हाथों में सचमुच एक बालक की तरह रहने लगो।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सनातन धर्म का उत्थान

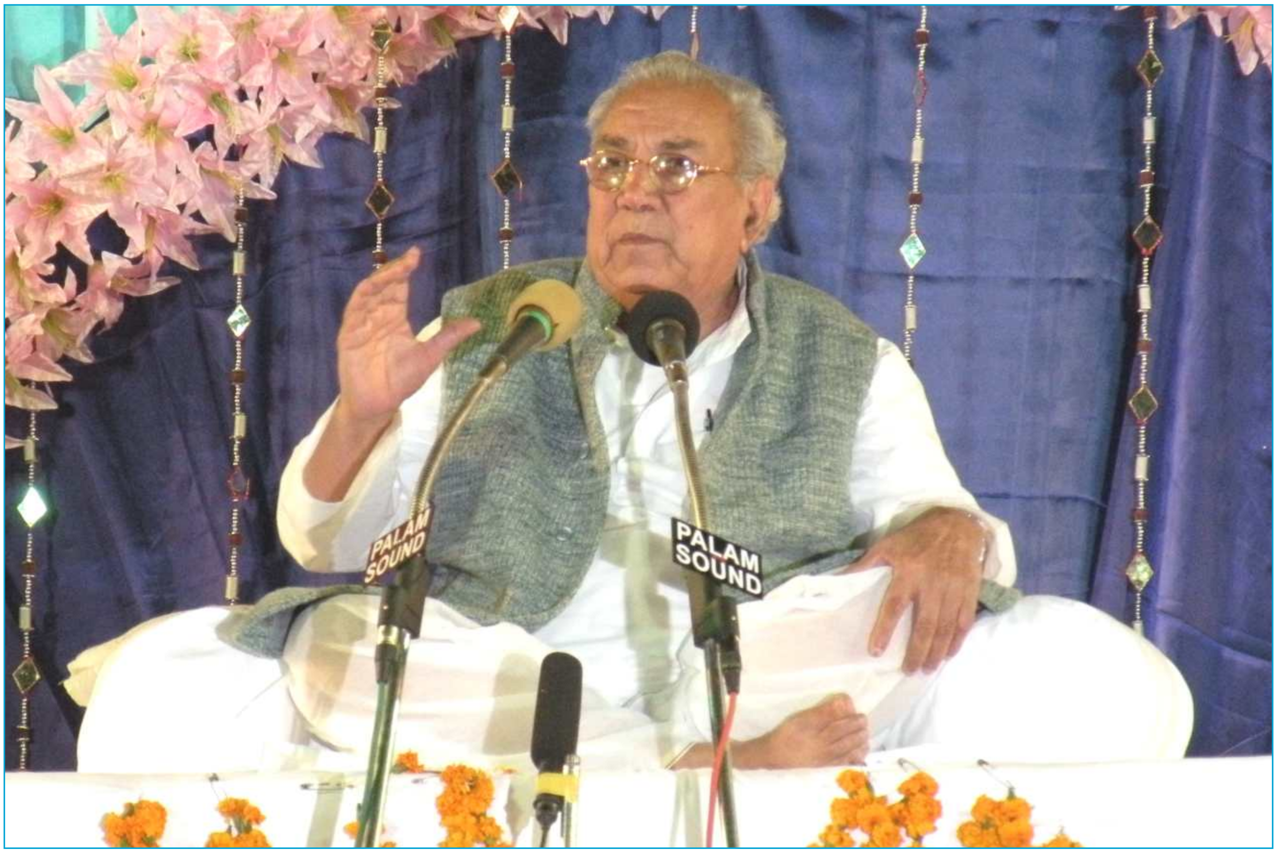

अब इस देश का, इस धर्म का, इस संस्कृति का उत्थान शुरू हो गया है। हमारे पतन के काल को ऋषि-मुनि नहीं रोक सके, क्योंकि कालचक्र अबाध गति से चलता है। अब इस दर्शन का उत्थान चक्र शुरू हो गया है, संसार की कोई शक्ति इसके उत्थान को नहीं रोक सकती है, किसी में वो सामर्थ्य नहीं हैं। श्रीअरविंद के अनुसार इसे रोकने की कल्पना करना ही पागलपन है।

आज तो हमने हिंदू धर्म को बहुत संकीर्ण दायरे में कैद कर लिया है। हिन्दू तो 'वसुधैव कुटुम्बकं' के सिद्धांत में विश्वास रखता है। मनुष्य मात्र को ईश्वर की संतान मानता है। हिन्दू कभी धर्म परिवर्तन की बात नहीं करता है, वो तो मनुष्य के परिवर्तन की बात करता है और परिवर्तन ही नहीं रूपान्तरण की बात करता है, रूपान्तरण शुरू हो गया है विश्व स्तर पर।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

वर्तमान भारत

एक ओर राज-शक्ति अब विधर्मी और भिन्न आचारवाले प्रबल राजाओं में आयी और दूसरी ओर पुरोहित-शक्ति अब समाज-शासन के ऊँचे पद से एकदम गिर गयी। कुरान की दण्डनीति अब मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों के स्थान पर आ डटी !

अरबी और फारसी भाषाओं ने संस्कृत की जगह ली। संस्कृत भाषा अब विजित और घृणित हिन्दुओं के धार्मिक कृत्यों के ही काम की रही और इसीलिए पुरोहितों के हाथ में किसी तरह जीवनयापन करने लगी। पुरोहित-शक्ति अब विवाह आदि संस्कार कराकर ही सन्तोष मानने लगी और यह भी मुसलमान राजाओं की कृपादृष्टि रहने तक ही।

पुरोहित-शक्ति के दबाव के कारण राज-शक्ति का विकास वैदिक काल में और उसके कुछ दिनों बाद तक न हो सका था। हम लोग देख चुके हैं कि बौद्ध विप्लव के बाद किस प्रकार पुरोहित-शक्ति के विनाश के साथ ही भारत की राज-शक्ति का पूर्ण विकास हुआ। बौद्ध साम्राज्य के पतन और मुसलमान साम्राज्य की स्थापना के बीच में राजपूतों ने राज-शक्ति को पुनः स्थापित करने की जो चेष्टा की थी, वह इसलिए असफल हुई कि पुरोहित-शक्ति ने इस समय फिर नया जीवन पाने का प्रयत्न किया था।

मुसलमान राजा पुरोहित-शक्ति को दबाकर ही मौर्य, गुप्त, आन्ध्र, क्षत्रप आदि राजाओं की गौरव-श्री की छटा फिर से दिखा सके थे।

इस प्रकार भारत की पुरोहित-शक्ति जिसका नियन्त्रण कुमारिल, शंकर, रामानुज आदि ने किया था, जिसकी रक्षा राजपूतों आदि के बाहुबल से हुई थी और जिसने बौद्धों और जैनों का संहार कर पुनर्जीवन प्राप्त करने की चेष्टा की थी, वही शक्ति मुसलमान काल में मानो सदा के लिए सो गयी।

इस समय वैर-विरोध केवल राजा और राजा में ही रहा। इस काल के अन्त में जब हिन्दू-शक्ति वीर मराठों या सिक्खों के हाथ आयी और ये हिन्दू धर्म को किसी अंश में पुनः स्थापित कर सके, तब भी पुरोहित-शक्ति का उससे विशेष सम्बन्ध नहीं था। सिक्ख लोग तो जब किसी ब्राह्मण को अपने सम्प्रदाय में लेते हैं, तब उससे स्पष्ट रूप से ब्राह्मण-चिह्न का परित्याग कराकर उसे अपने धर्म-चिह्न से भूषित करते हैं।

इस प्रकार अनेक संघर्षों के बाद राज-शक्ति की अन्तिम जय-घोषणा विधर्मी राजाओं के नाम पर भारत-गगन में कई शताब्दियों तक गूंजती रही, परन्तु इस युग के अन्त में एक नयी शक्ति धीरे धीरे इस देश में अपना प्रभाव फैलाने लगी। पर यह शक्ति भारतवासियों के लिए ऐसी नयी है, और इसका जन्म-कर्म इतना कम समझ में आता है और इसका प्रभाव इतना प्रबल है कि भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक इसके राज्य करते रहने पर भी थोड़े से ही भारतवासी समझते हैं कि यह शक्ति क्या है ? यह बात भारत पर इंग्लैण्ड के अधिकार की है।

इस देश का विशाल धन और हरी-भरी खेती विदेशियों के मन में बहुत पुराने समय से अधिकार की लालसा उत्पन्न करती आ रही है। भारतवासी विजातियों द्वारा बारम्बार पददलित हुए हैं। तो फिर हम लोग भारत पर इंग्लैण्ड के अधिकार को एक अपूर्व घटना क्यों मानते हैं ?

शासक प्रमो धर्म, मंत्र और शास्त्र के बल से बलवान, शापरूपी अस्त्र से सज्जित तथा सांसारिक स्पृहाशून्य तपस्वियों के भ्र-भंग के सामने प्रतापी राजाओं का काँपना भारतवासी सनातन काल से देखते आये हैं। फिर सेना और शस्त्रों से सजे हुए वीर राजाओं के अकुण्ठित वीर्य और एकाधिकार के सामने प्रजा का-सिंह के सामने बकरियों की भाँति-सिर झुकाये खड़ा रहना भी उन्होंने अवश्य देखा था।

संदर्भ-श्री विवेकानन्द
साहित्य भाग-9, पृष्ठ-201 से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सनातन धर्म

अमेरिका में प्रवचन करते हुए श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था – ''विभिन्न मतमतान्तरों या सिद्धान्तों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् हिन्दू धर्म तो प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कार का धर्म है। केवल विश्वास का धर्म, हिन्दू धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म का मूलमंत्र तो 'मैं' आत्मा हूँ, यह विश्वास होना और तद्रुप बन जाना है।'' आज हमारे धर्म से प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात पूर्णरूप से विदा हो चुकी है। यही धर्म का प्राण थी। अतः इसके अभाव में प्राणहीन धर्म मानव को कोई लाभ पहुँचाने की स्थिति में नहीं है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ईश्वर की प्राप्ति का पथ शरीर के भीतर ही है।

श्री अरविन्द ने मृणालिनी देवी को पत्र लिखा था –''ईश्वर यदि है तो उनके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनका साक्षात्कार प्राप्त करने का कोई–न–कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना भी दुर्गम क्यों न हो ? उस पथ से जाने का मैंने दृढ़संकल्प कर लिया है। हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है। उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सबका पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है, एक माह के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है। जिन जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ।

''महर्षि अरविन्द के अनुसार उस पथ पर चलकर हर प्राणी सिद्धि प्राप्त कर सकता है। इस पथ पर चलने के अधिकारी स्त्री–पुरुष दोनों बराबर के हकदार है। मेरी प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार भी एक मात्र यही रास्ता है। जिस पर चलने से ही उस परमधाम तक की यात्रा सम्भव है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी., दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याददाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव का आगमन

सद्गुरु वह आभामय चेहरा है,
जिसे 'ईश्वर' हम तक पहुँचने के लिए धारण करता है।

"हम सबको सद्गुरुदेव के आगमन के समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिए और सद्गुरुदेव की पूजा 'ईश्वर' की भाँति की जानी चाहिए। वह ईश्वर है, उनसे तनिक भी कम नहीं। सद्गुरु तुम्हारे देखते देखते क्रमशः अंतर्धान हो जाते हैं, और रह क्या जाता है? गुरु के चित्र का स्थान स्वयं ईश्वर ले लेता है।

सद्गुरु वह आभामय चेहरा है, जिसे ईश्वर हम तक पहुँचने के लिए धारण करता है। जब हम एकटक उन्हें निहारते हैं तो धीरे-धीरे चेहरा अदृश्य हो जाता है और ईश्वर प्रकट हो जाता है।

मैं सद्गुरुदेव भगवान् को नमस्कार करता हूँ, जो सर्वगुणातीत और सर्वोच्च है।

–स्वामी विवेकानन्द 'वॉल्यूम-3'

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान का जनक है

इस जगत् के सभी सौदे नगद के है। यहाँ उधार का काम ही नहीं। परिणाम के अभाव में ही लोग धर्म से विमुख हुए हैं। आध्यात्मिक विज्ञान भौतिक विज्ञान का जनक है। आज तक का सारा प्रकट संसार उसी परमसत्ता की देन है। पिता पुत्र में द्वेष कैसा? इस कृत्रिम द्वेष भाव ने ही संसार को आज की अशान्त स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है।

www.the-comforter.org

इसके बारे में महर्षि श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है:- "एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन के लिए हर कार्य आवश्यक है"। अर्थात् जीवन का हर कार्य कमोवेश अध्यात्म से ओत-प्रोत है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

परमसत्ता से सर्वाधिक दूरी का कारण

आज का मानव उस क्रमिक अलगाव की प्रक्रिया के कारण, उस परमसत्ता से सर्वाधिक दूरी पर आकर खड़ा हो गया है। कृत्रिम पतन के साथ हम लोगों ने 'इहलोक' के स्थान पर केवल 'परलोक' की तरफ ताकना प्रारम्भ कर दिया। समाज के आधे अंग-स्त्रियों को पंगु बना कर रख दिया। उसे आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत कुछ बातों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। जगत् जननी के साथ इस अन्याय के कारण ही संसार आज इतना दुःखी है। स्त्री जाति का मां का स्वरूप, बहिन का स्वरूप, दादी का स्वरूप आदि सभी स्वरूप भूलकर उसको केवल भोग की वस्तु ही माना जा रहा है। संसार के मानव ने जगत् जननी की ऐसी दुर्गति कर दी कि उसे रसालत में पहुँचा दिया है। हमारे प्रायः सभी धर्मगुरुओं ने कंचन और कामिनी का जो स्वरूप बना डाला है, वही दुःखों का कारण है।

इसके अतिरिक्त आराधनाओं का ऐसा स्वरूप बना कर रख दिया कि जिसे स्त्रियाँ अपनी प्राकृतिक संरचना के कारण, करने में असमर्थ हैं। जब तक धर्म का असली स्वरूप प्रकट नहीं हो जाता, इस क्षेत्र में प्रगति और शान्ति असम्भव है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

संजीवनी मंत्र

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा में दिये जाने वाले संजीवनी मंत्र के प्रभाव के विषय में गुरुदेव कहते हैं कि–

"यह बीज मंत्र है। जिस तरह बरगद का बीज राई जितना छोटा होता है और बड़ा होकर विशाल वृक्ष बन जाता है। उसी तरह इस मंत्र की शक्ति का आप अंदाजा नहीं लगा सकते"

यह मंत्र संस्था की वेबसाइट www.the-comforter.org और संस्था के यूट्युब चैनल Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY पर उपल्बध है।इसके साथ ही मंत्र जप और ध्यान की विधि भी आप यहाँ से प्राप्त कर सकते हैं।

यादों के पल...

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के पावन सानिध्य में आयोजित शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम का एक विहंगम दृश्य।

यादों के पल...

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम में समर्थ सद्गुरुदेव के पावन सानिध्य में ध्यान मग्न साधक (22 अक्टूबर 2009)

यादों के पल...

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम में समर्थ सद्गुरुदेव के पावन सानिध्य में संध्या के समय ध्यान मग्न साधक (22 अक्टूबर 2009)

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

www.the-comforter.org

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

सिद्धयोग क्या है ?

सिद्धयोग, योग के दर्शन पर आधारित है, जो कई हजार वर्ष पूर्व प्राचीन ऋषि श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने प्रतिपादित किया तथा एक अन्य ऋषि पातंजलि ने इसे लिपिबद्ध कर नियम बनाये जो 'योगसूत्र' के नाम से जाने जाते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने इस योग को हिमालय में कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले शाश्वत सर्वोच्च चेतना के साकार रूप भगवान शिव से सीखा था। ऋषि को, इस ज्ञान को मानवता के मोक्ष हेतु प्रदान करने के लिए कहा गया था। ज्ञान तथा विद्वत्ता से युक्त यह योग, गुरु शिष्य परम्परा में समय-समय पर दिया जाता रहा है।

यह योग (सिद्धयोग) नाथमत के योगियों की देन है, इसमें सभी प्रकार के योग जैसे भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, क्रियायोग, ज्ञानयोग, लययोग, भावयोग, हठयोग आदि सम्मिलित हैं, इसीलिए इसे पूर्ण योग या महायोग भी कहते हैं। इससे साधक के त्रिविध ताप आधि दैहिक (Physical), आधि भौतिक (Mental) व आधि दैविक (Spiritual) नष्ट हो जाते हैं तथा साधक जीवनमुक्त हो जाता है। महर्षि श्री अरविन्द ने इसे पार्थिव अमरत्त्व (Terrestrial Immoratality) की संज्ञा दी है। पातंजलि योगदर्शन में साधनपाद के 21 वें श्लोक में योग के आठ अंगों- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि का वर्णन है। बौद्धिक प्रयास से इस युग में उनका पालन करना असम्भव है।

इसलिये इतने महत्त्वपूर्ण दर्शन के बारे में नगण्य लोगों को ही जानकारी है। समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा दी जाने वाली शक्तिपात दीक्षा से साधक की शक्ति (कुण्डलिनी) जाग्रत हो जाती है। वह जाग्रत कुण्डलिनी साधक को उपर्युक्त अष्टांगयोग की सभी साधनाएँ स्वयं अपने अधीन करवाती है। इस प्रकार जो योग होता है उसमें साधक का सहयोग या असहयोग कोई काम नहीं करता है। कुण्डलिनी के नियंत्रण में सारी क्रियाएँ स्वतः ही होती है इसलिए इसे सिद्धयोग कहते हैं। जबकि अन्य सभी प्रकार के योग मानवीय प्रयास से होते हैं।

गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात-दीक्षा से कुण्डलिनी जाग्रत करने का सिद्धांत है। यह शक्तिपात केवल समर्थ सद्गुरु की कृपा द्वारा ही प्राप्त होता है।

◆◆◆

www.the-comforter.org

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् ____________________

____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।